ISSN 2349-638x
IMPACT FACTOR 8.02

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal

Peer Review and Indexed Monthly Journal
Website : www.aiirjournal.com
Email: aiirjpramod@gmail.com

SPECIAL ISSUE

on

“ साहित्य संस्कृती आणि सामाजिक शास्त्रे यातील समकालीन विचार व समस्या ”

Feb. 2024

Chief Editor

Dr. Pramod P. Tandale

Executive Editor

Dr.Bapurao V. Andhale
Dr. Anant B. Sarkale
Dr.Anil D. Wadkar
Dr.Bali R. Shinde

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

Peer Reviewed and Indexed Journal

ISSN 2349-638x

Impact Factor 8.02

Website :- www.aiirjournal.com

Late Ramesh Warpudkar Arts, Commerce & Science College
Sopneth Dist.Parbham (M.S.)

Special Issue No.133

" साहित्य संस्कृती आणि सामाजिक शास्त्रे यातील समकालीन विचार व समस्या "

Chief Editor

Dr. Pramod P. Tandale

Editor's

Dr.B.V. Andhale

Dr. A.B. Sarkale

Dr.A.D. Wadkar

Dr.B.R.Shinde

Late Ramesh Warpudkar Arts, Commerce & Science College Sonpeth Dist.Parbhani (M.S.)

Sr. No.	Name of the Author	Title of Paper	Page No.
19.	डॉ.गनी गफूर साहब शेख	हिंदी भाषा, संस्कृति और जीवन-दर्शन	77
20.	डॉ. कदम एच. पी.	समकालीन आंतरराष्ट्रीय संबंध आणि भारताचे अलिप्ततावादी धोरण	81
21.	डॉ. एम.डी.कच्छवे	कृषी पर्यटन : महत्व, आवश्यक सुविधा,फायदे आणि अडचणी	84
22.	डॉ.मोहन मिसाळ	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यात स्त्रियांचे योगदान	89
23.	डी.एस.पटवारी	भारतीय महिलांची ऐतिहासिक स्थिती व मानवी हक्क	92
24.	प्रा.डॉ. बी.आर.शिंदे	लेखाकर्म व्यवसाय उद्योगाचा आत्मा	97
25.	प्रो.डॉ. सा. द. सोनसळे	आंबेडकरवादी कादंबरी : एक दृष्टिक्षेप	100
26.	डॉ.सुभाष दौलतराव उपाते	भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण 2020 : एक चिकित्सक अध्ययन	105
27.	डॉ. प्रो. व्ही. बी कुलकर्णी	मीडिया में हिंदी भाषा का प्रयोग और परिवर्तन	111
28.	डॉ वडचकर शिवाजी	नारी विमर्श की संकल्पना	114
29.	प्रा.सखाराम बाबाराव कदम	मराठी ग्रामीण कवितेची भाषा व वैशिष्ट्ये (कालखंड १९९० ते २०१०)	118
30.	डॉ. सविता शिवनाथ झुंजारे	संयुक्त राष्ट्र संघटना सिद्धांत आणि व्यव्हार	124
31.	कु डवरे संजीवनी शिवाजी डॉ. सोळंके नवीन केशवराव	आदिवासींच्या भाषिक समस्या	129
32.	डॉ वाकनकर गोविंद बन्सीधरराव	शारीरिक शिक्षणआणि खेळात योगाचे फायदे	132
33.	डॉ. मारोती बालासाहेब भोसले	मराठी भाषा: संधी व आव्हाने	136

Late Ramesh Warpudkar Arts, Commerce & Science College
Sonpeth Dist.Parbhani (M.S.)

मीडिया में हिंदी भाषा का प्रयोग और परिवर्तन

डॉ. प्रो. व्ही. बी कुलकर्णी
हिन्दी विभागाध्यक्षा
कै. रमेश वरपूडकर महाविद्यालय, सोनपेठ, जि. परभणी

प्रस्तावना—

सोशल मीडिया ने लोगों को असीमित ढंग से कभी भी और कहीं भी और किसी के भी साथ अपने विचारों की भागीदारी करने के लिए प्लेटफार्म दिया है। इस पर लोग अपनी भाषा में विभिन्न प्रकार के विचार भाव अनुभव आदि को व्यक्त कर सकते हैं। इसी तरह से लोग इन माध्यमों पर विविध प्रकार के फॉर्मेट, लेखन कार्य कर सकते हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार के सोशल मीडिया ने भिन्न-भिन्न तरीके से लोगों को अपनी बातों एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया है। इसलिए भाषा को विभिन्न तरीके से लिखने और व्यक्त करने के नए-नए आयाम विकसित होने लगे हैं। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप आदि सोशल मीडिया ने अपने-अपने तरीके से अभिव्यक्ति के फॉर्मेट विकसित किए हैं। "वर्तमान समय में मीडिया और हिंदी भाषा का घनिष्ठ संबंध स्थापित हुआ है, जहांँ मीडिया की भाषा हिंदी बनी है. वही हिंदी की लोकप्रियता भी मीडिया से बढ़ी है। मीडिया ने हिंदी को विश्वस्तर पर विशिष्ट पहचान दिलाई है।। हिंदी बहुत ही मजबूत भाषा है, मीडिया के अंतर्गत समाचार पत्र पत्रिकाएंँ, विज्ञापन, रेडियों, दूरदर्शन फिल्म, संगणक आदि साधन जो है वह हिंदी भाषा के प्रचार- प्रसार में अपनी- अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन माध्यमों ने अपने प्रचार प्रसार के लिए हिंदी भाषा को चुना है, क्योंकि हिंदी ने जन भाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा विज्ञापन भाषा, स्वभाषा, विश्व भाषा, मीडिया भाषा जैसे अनेक- अनेक रूपों को अपने भीतर संजोया है। उसी के साथ हिंदी अपने ज्ञान एवं विशेषज्ञ से हमें एक विशाल जगत से हमारा परिचय करवाती है।

हिंदी की प्रमुख वेबसाइट —

अनुभूति, अनुरोध, अभिव्यक्ति, हिंदी नेस्ट, गीत पहल, भारत दर्शन, शब्दांकन, सृजन गाथा, स्वर्ग विभा पूर्वाभास, साहित्य कुंज, समांतर, हिंदी चेतना, गर्भनाल, हिंदी समय, कविता कोश, गद्य कोश, आदि जैसी सैकड़ों ऐसी वेबसाइट है जिन पर हिंदी साहित्य विभिन्न विधाओं में प्रचुर मात्रा में लिखा जा रहा है। और साथ ही इन वेबसाइट्स पर प्रकाशित साहित्य को विश्व भर में पढ़ा जा रहा है।

हिंदी के प्रसार में सोशल मीडिया की भूमिका—

देश ही नही वरना पूरे विश्व में मीडिया और सोशल मीडिया का प्रभाव तेजी से बढा है। इसे ध्यान में रखते हुए भाषा सुधार समिति ने आवश्यक सुधार किये। जिससे हिंदी को सरल एवं सहज बनाया जा सके। क्योंकि हिंदी के प्रचार प्रसार में मीडिया, सोशल मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। चाहे वह दूरदर्शन हो, समाचार पत्र हो, आकाशवाणी हो, पत्रिकाएं हो, सिनेमा हो, व्हाट्सएप हो, ट्विटर हो या इंस्टाग्राम हो सोशल मीडिया में हिंदी का प्रयोग वर्तमान समय में बढा है। एक समय था जब मीडिया में केवल दो पत्रकार थे प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रचलित थे। धीरे-धीरे इंटरनेट का उद्भव हुआ तो उसने अपने तरीके से समाज को प्रभावित करना शुरू किया। रेडियो ने हिंदी की पहचान बढायी तो वही सिनेमा ने इसकी लोकप्रियता में चार चांँद लगाये। टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम से अहिंदी भाषी लोगों को हिंदी सीखने के लिए प्रेरित किया। टी.वी. पर प्रसारित होने वाला कार्यक्रम 'कौन बनेगा करोड़पति' अत्यधिक प्रसिद्ध हुआ। इस कार्यक्रम की वजह से कितने हिंदी भाषी लोग हिंदी सीखे और अच्छा परिणाम प्राप्त हुआ।

आज हिंदी राजनीति मनोरंजन एवं विज्ञापनों की प्रमुख भाषा बन गई है। डिजिटल समय के दौर में हिंदी का स्वरूप भी बदला है। फेसबुक एवं अन्य सोशल मीडिया ने नवोदित हिंदी के साहित्यकारों को अपनी रचनाओं को पाठकों तक द्रुतगति से पहुंचने का कार्य किया है। आज फेसबुक पर कई साहित्यिक पेज जैसे हिंदी पत्रिका पेज, हिंदी कविता पेज एवं हिंदी समीक्षा पेज इत्यादि जहां पर समकालीन हिंदी प्रेमियों की रचनाएंँ एवं समीक्षाएंँ देखी जा सकती है। सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग बढ़ने के तीन महत्वपूर्ण कारण

(1) हिंदी का तकनीकी विकास
(2) बाजारवाद का दबाव
(3) हिंदी एवं सहयोगी भाषा से आम जनता का जुड़ाव

इंटरनेट पर हिंदी साहित्यिक सीमाओं को लांघकर अपना प्रसार कर रही है। यह कहानी, उपन्यास से आगे बढ़कर अनेकानेक साहित्येत्तर विधाओं में विश्व की अन्य भाषाओं से कदमताल कर रही है। धर्मेंद्र प्रताप सिंह के शब्दों में, " आने वाला समय हिंदी का है हिंदी का मजबूत पक्ष यह भी है कि यह बाजार की भाषा बन चुकी है जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी उपयोगिता सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है।"2

मीडिया में हिंदी भाषा का प्रयोग और परिवर्तन —

वैश्वीकरण के इस युग में मीडिया अपने आप में एक अर्थतंत्र बन चुका है। इस अर्थतंत्र से जो जुड़ चुके हैं एवं जो जुड़ रहे हैं व अपने अर्थ स्तर को बेहत्तर बना रहे हैं। अत: ज़रूरी बन गया है कि हिंदी तथा अन्य भाषा को पढ़ने जानने एवं समझने वाले अपने आप को मीडिया से जोड़कर अपने अर्थ स्तर को बेहतर बनाएं। मीडिया में हिंदी तथा अन्य भाषा को पढ़ने जानने एवं समझने वालों के लिए रोजगार के असीम अवसर है। अत: ज़रूरी बन जाता है कि इनअवसरों को अपने हुनर एवं ज्ञान से बखूबी बनाने की कोशिश करें। गत दो दशकों में जिस तीव्रता से प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का विस्तार हुआ है, जाहिर तौर पर उसमें हिंदी भाषा की बड़ी भूमिका है। मीडिया के माध्यम से देश में एक नए बाजार का सृजन हुआ है। इसका श्रेय निरंतर बदल रही हिंदी को है जो संप्रेषण का सशक्त माध्यम बनाकर करोड़ों दिलों तक पहुंच रही है। बाजार की मांग है कि उसके उत्पाद का संदेश उस भाषा में हो जिसे उपभोक्ता तुरंत समझ ले. और प्रोडक्ट की खूबियों को आत्मसात कर ले। विज्ञापन की क्रिएटिव हिंदी भाषा जादू जगाती हैं। वह बाजार को समृद्ध करती है। अखबारों और सैकड़ो न्यूज़ चैनल और एफ.एम. रेडियो की ग्रोथ ने हिंदी के बल पर ही अपने लिए करोड़ों पाठक, दर्शक, श्रोता तैयार किए हैं।

हिंदी को सरल बनाने में मीडिया का अहम योगदान है। हिंदी समृद्ध, संपन्न और एनरिच हो रही है। "विज्ञापन के क्षेत्र में जिस हिंदी भाषा का प्रयोग किया जा रहा है उसमें एक विशिष्ट प्रकार की गत्यात्मकता तथा लयात्मकता देखी जा सकती है। विज्ञापन की भाषा संघटना इतनी मनमोहन रखने का प्रयास किया जाता है कि विज्ञापन सुनने वालों के मन- मस्तिष्क पर इतना गहरा प्रभाव पढ़ना चाहिए कि श्रोता प्रचार करने वाले के तथ्य पर गौर करने अथवा उसे मनाने के लिए एक प्रकार से बाध्य हो जाए।"3 वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने हिंदी भाषा को कुछ नए आयाम दिए हैं। हिंदी को एक वैश्विक स्तर पर पहुंचने में भूमंडलीकरण एवं संचार माध्यमों ने मदद की है। "बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कारण हिंदी आज विज्ञापन की हिंदी हो गई है। विश्व स्तर पर सबसे ज्यादा विज्ञापन हिंदी में ही बनाए जाते हैं, क्योंकि विश्व में बोलने और समझने वालों की संख्या की दृष्टि से हिंदी प्रथम क्रमांक पर है। अत: इसमें कोई शक नहीं कि बाजारवाद के कारण ही विज्ञापनी हिंदी का विकास हो रहा है।"4 इससे स्पष्ट होता है कि विश्व बाजार में हिंदी अपने स्तर को बना रही है। और वैश्वीकरण के दौर में बाजार ही अप्रत्यक्ष रूप में हिंदी के प्रचार और प्रसार में जुड़ा है।

आजादी के बाद हिंदी पत्रकारिता का विकास होता गया। प्रो. रमेश जैन लिखते हैं कि, " स्वाधीनता के पश्चात हिंदी पत्रकारिता में महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय उन्नति हुई। भारत का कोई ऐसा प्रांत नहीं रहा जहां से हिंदी पत्र- पत्रिकाएं नहीं हुई थी। प्रसार संख्या में हिंदी को सर्वोच्च स्थान 1978 से प्राप्त हुआ।"5 पत्रकारिता और साहित्य में उतना ही अंतर था जितना की सुगम संगीत एवं शास्त्रीय संगीत में। यह इसलिए था क्योंकि अधिकांश पत्रकार साहित्यकार होते थे और साहित्यकार पत्रकार। इसी पृष्ठभूमि में समाचार- पत्र देश के साथ-साथ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक चेतना जगाने का भी कार्य करते थे। आचार्य शिवपूजन सहाय का यह कथन इसी बात की पुष्टि करता है। - " हिंदी दैनिकों ने जहां देश को उदबुद्ध करने में अथक प्रयास किया है। वहां जनता में साहित्यिक चेतना जगाने का श्रेय भी पाया है।"6 आज विश्व के अनेक देशों में अध्ययन- अध्यापन तथा सृजनात्मक लेखन के द्वारा हिंदी का विकास हो रहा है। विश्व हिंदी सम्मेलनों के जरिए हिंदी का फैलाव तिव्र गति से बढ़ रहा है। आज प्रयोक्ताओं की दृष्टि से हिंदी विश्व में प्रथम क्रमांक की भाषा बन चुकी है। भारत सरकार के प्रयास से हिंदी के देवनागरी फॉन्ट में एकरूपता लाने का प्रयास किया जा रहा है। पुणे की "सी-डेक" कंपनी के प्रयास से कंप्यूटर के जरिए ध्वनि

टकोण का प्रयास और सौ प्रतिशत सफलता की मंजिल की ओर तीव्र गति से अग्रेसर हो रहा है। आज संचार माध्यमों के महत्व को नकारा नहीं जा सकता बल्कि " जिस देश के संचार माध्यम जितने अधिक विकसित है उनकी संचार माध्यम प्रणाली जितनी अधिक सक्षम है वह देश सक्षम है, तथा विश्व को अपनी मुट्ठी में बांधने की चेष्टा कर सकता है।"7 भारत में हिंदी का प्रचार एवं प्रसार वैश्विक स्तर साहित्य के माध्यम से जितना हुआ है उससे कई गुना ज्यादा जनसंचार माध्यमों ने किया है।

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में साहित्य और मीडिया दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। साहित्य भावना के धरातल पर 'बेहतर मनुष्य' और 'बेहतर समाज' की संकल्पना को साकार करने में समाज का मददगार बनता है। और मीडिया अपनी संचारणशीलता के व्यापक परिप्रेक्ष्य में जन जागरण की पृष्ठभूमि तैयार करता है। " दो ढाई शताब्दी पूर्व तक सूचनाएं जो केवल शक्तिशाली वर्ग तक सीमित थी, ज्ञान जो किसी खास वर्ग की बापौती था, उसे आम लोगों तक पहुंचने में प्रिंट मीडिया का अवदान अविस्मरणीय है।"8

सारांश—

हिंदी के उज्जवल भविष्य के लिए उसका नई तकनीकों से जुड़ना अत्यंत आवश्यक है। इक्कीसवीं सदी के नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों ने हिंदी का इंटरनेट के माध्यम से दिन- प्रतिदिन प्रचार एवं प्रसार हो रहा है। सोशल मीडिया ने हिंदी के विकास के लिए एक जमीन निर्मित की है,। हिंदी के प्रचार- प्रसार के लिए सोशल मीडिया एक सशक्त माध्यम है। हिंदी तभी सशक्त बनेगी जब वह व्यापार, रोजगार एवं वैज्ञानिक विकास एवं प्रसार की भाषा बनेगी। मीडिया के इस युग में हिंदी भाषा के प्रचार एवं प्रसार में हिंदी की विभिन्न वेबसाइट्स, हिंदी ब्लॉग्ज (चिट्ठे) सोशल मीडिया आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वैश्वीकरण के दौर में दिन प्रतिदिन हिंदी की संभावनाएं बढ़ने लगी है। वैश्विक बाजार में अपना स्थान निर्धारित करने के लिए हिंदी भाषा के विकास में आधुनिक समय में प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, विज्ञापन, पत्रकारिता और सिनेमा के साथ-साथ इंटरनेट भी हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। आज हिंदी किसी गांव की भाषा न रहकर प्रदेश, राज्य, राष्ट्र, विश्व, संपर्क तथा विश्व व्यवसाय की भाषा के रूप में सामने आई है। आज सूचना एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न उपकरणों में हिंदी को भले ही प्रेम पूर्वक अपनाया न अपनाकर उसकी व्यावसायिक आवश्यकता को देखकर अपनाया हो किंतु इससे जनसंचार के इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में हिंदी का प्रवेश उसके भविष्य के लिए सुखद सिद्ध होगा। इंटरनेट की आवश्यकता के अनुरूप हिंदी को ढालने का प्रयास जारी रखते हुए उसकी गति तेज करनी होगी। मीडिया ने हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज का सच यह है कि जिस तरह हिंदी को अपने प्रसार- प्रसार के लिए मीडिया की जरूरत है। इस तरह मीडिया को अपने विस्तार के लिए हिंदी की आवश्यकता है। हिंदी अब केवल भारत की ही नहीं बल्कि विश्व की भाषा बन चुकी है।

संदर्भ—

(1) मीडिया और हिंदी बदलती प्रवृत्तियां- सं- रविंद्र जाधव, केशव मोरे- वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली- पृष्ठ 144
(2) मीडिया के बदलते तेवर अनामी शरण बंसल-श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली - प्रथम संस्करण 2009 (3)जनसंचार मध्यम एवं हिंदी भाषा- डॉ अंबादास देशमुख- प्रथम संस्करण 2017- पृष्ठ 165
(4) मीडिया: हिंदी और पत्रकारिता- संपादक डॉ. आरिफ महात, सहसंपादक डॉ रशीद तहसीलदार -पृष्ठ 51
(5) जनसंचार एवं पत्रकारिता कल और आज- सिद्राम कृष्णा खोत- पृष्ठ 41
(6) हिंदी पत्रकारिता और भावात्मक एकता- अर्जुन तिवारी- पृष्ठ 36
(7) भारतीय वृत्तपत्र निबंधक- 2011- 2012
(8) मीडिया हिंदी और पत्रकारिता संपादक डॉ आरिफ महात, सहसंपादक डॉ रशीद तहसीलदार -पृष्ठ 13

Principal
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College.Sonpeth.Dist.Parbhani